Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्व-धर्म-ग्रन्थ प्रदर्शनी

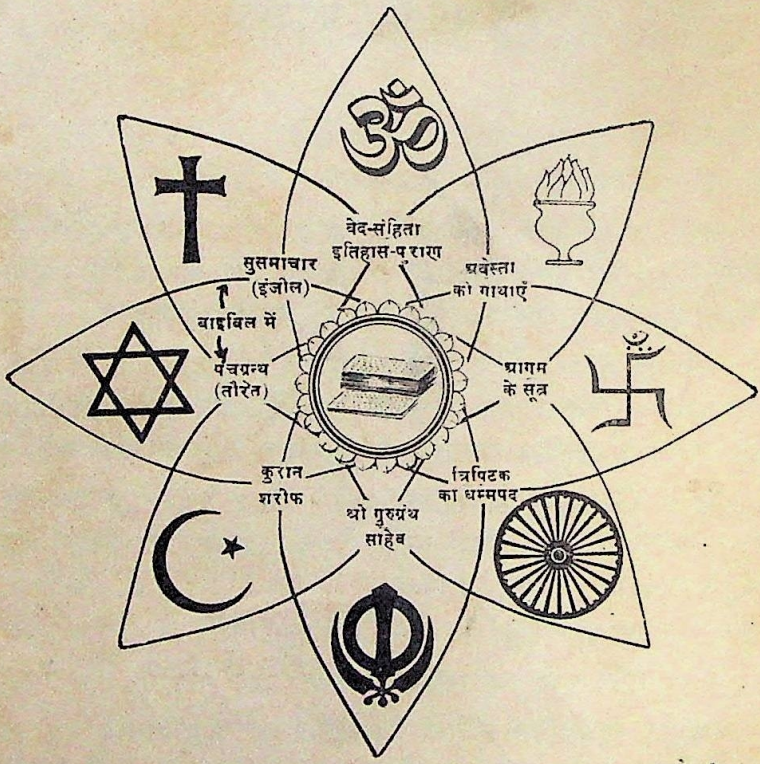

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्व-धर्म-ग्रन्थ प्रदर्शनी

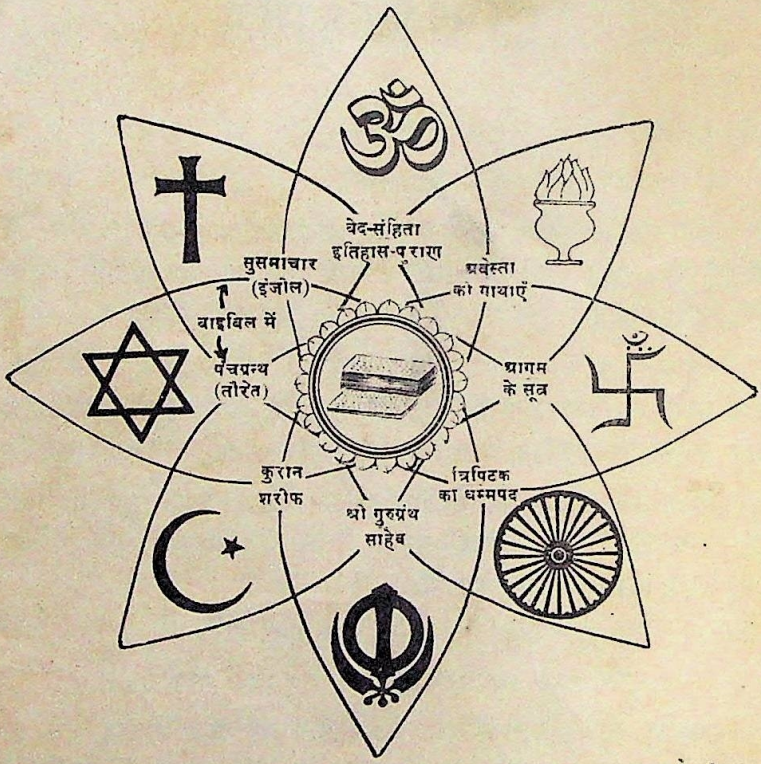

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्व-धर्म-ग्रंथ प्रदर्शनी

प्रिय दर्शको !

शान्ति और मैत्री की मंगल कामना !

इस सर्व-धर्म-ग्रन्थ प्रदर्शनी का आयोजन सर्व-धर्म-समभाव की प्रेरणा से हुआ। सभी धर्म-पंथ में सर्व-हित का विश्वव्यापी सन्देश मिलता है: "सर्वेषां शुभं भवतु, सुखं भवतु, कल्याणं भवतु"।

मानवता में घोर अशान्ति है। इसलिए हम श्रद्धा-भाव से सर्व-धर्म-ग्रन्थों में दिव्य शान्ति का संदेश सुनकर, उसे अपने स्वधर्मग्रन्थ की आस्था के अनुसार प्रेमाचरण में कार्यान्वित करने की चेष्टा करें।

विश्व धर्म-ग्रन्थों की मौलिक एकता सिद्ध करते हुए महामती प्राणनाथ-जी ने तीन सदियों पहले ही भारतवासियों से प्रेमधर्म का अनुसरण करने का अनुरोध किया था :

जो कुछ कह्या कतेब ने, सोई कह्या वेद।
दोऊ बन्दे एक साहिब के, लड़त बिना पाए भेद॥

अर्थात्, कुरान शरीफ तथा वेद-संहिता का ध्येय अन्ततः एक ही है; लेकिन हम-सब, जो एक ही परमपिता की संतान हैं, धर्मग्रन्थों का अर्थ न समझने के कारण आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं।

सर्वधर्मग्रन्थों की शिक्षा है : "परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम," अर्थात् दूसरों का भला करने से पुण्य धर्म होता है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और दूसरों को पीड़ित करने से पापाचार। इसलिए हितोपदेश में यह प्रश्न पूछा गया है : "श्रुतेन किं, यो न धर्ममाचरेत?" संदेश सुनने मात्र से क्या लाभ, जब तक मानव इसे धर्माचरण में अभिव्यक्त न करे?

सभी धर्म-पंथ का परमलक्ष्य तो मानव-विमुक्ति है, जो ईश्वरीय अनुग्रह पर आधारित है। लेकिन मुक्ति की साधना में युक्ति भी अनिवार्य है! अज्ञान के कारण धर्मांधता फैल जाती है। धर्मशास्त्र में एक मानवीय पक्षी भी है, जो उसकी भाषा, लिपि और आकृति में स्पष्ट दिखाई देता है। सही जानकारी के अभाव से पुस्तक के प्रति अंध-श्रद्धा उत्पन्न होती है। राजर्षि टण्डन कहते हैं :

"भारतीय संस्कृति बौद्धिक है, बुद्धि के ऊपर निर्भर है। जहाँ बुद्धि नहीं, वहाँ युक्ति नहीं; वहाँ भारतीय संस्कृति नहीं; वहाँ धर्म नहीं। वृहस्पति-स्मृति का एक वाक्य याद आ गया : केवलम् शास्त्रमाश्रित्य, न कर्त्तव्य विनिर्णय।" हमारा धर्माचरण युक्ति संगत हो, किसी भी शास्त्र के सम्बन्ध में संकीर्ण कट्टरता की भावना न हो। स्वधर्म-ग्रन्थ के प्रति भी हमारी आस्था परिपक्व बने। उसके सर्वहितकारी वचनों का अधिक प्रयोग करें।

इस सर्व-धर्म-ग्रन्थ प्रदर्शनी की सामग्री "सेतुकरण संस्थान" (विश्व भाषा सेतु इकाई, इलाहाबाद) द्वारा संग्रहीत हुई। इसमें प्रदर्शित बहुत-सी पुस्तकें "भुवन वाणी ट्रस्ट" (मौसमबाग, सीतापुर रोड, लखनऊ–226020) से प्राप्य हैं। भुवन वाणी ट्रस्ट के मुख्य-न्यासी सभापति श्री विनय कुमार अवस्थी का यह उद्‌गार है :

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

''आज हमारे देश में धर्म-धरा-विषयक अनेक संघर्ष, अन्तर्युद्ध और बखेड़े खड़े हो गये हैं, जिनका उपचार राष्ट्रीय भावना के अंगीकरण के बिना सम्भाव्य नहीं है। इस स्थिति में शाश्वत मानवीय मूल्यों के उद्घोषक और राष्ट्रीयता-अन्तर्राष्ट्रीयता के संस्थापक उन ग्रन्थों का लोकव्यापी प्रचार सर्वथा प्रयोज्य है, जिन्हें अखिल मानव-हिताकांक्षी, ऋषिकल्प विचार-विभूति-सम्पन्न महात्माओं ने, वेदव्यास, वाल्मीकि, ईसा मसीह, अरस्तू, मोहम्मद, बुद्ध, महावीर, विनोबा भावे और गाँधी सदृश्य महज्जनों ने लिखा अथवा लिखवाया है। भारतीय अभारतीय उदारचेता अन्य विपुल साहित्यकारों का गौरवान्वित साहित्य भी इस दिशा में हमारे लिए एक प्रकाशस्तम्भ है। अतः ऐसी विभूतियों के अनमोल, सार्वभौमिक और सर्वोपयोगी साहित्य को हम सामर्थ्यानुसार नागरी लिपिबद्ध करके गद्य-पद्यार्थ-सहित प्रस्तुत करने में संलग्न हैं।

सत्पुरुष सदैव सर्व-हितकारी बातें ही सिखाते आये हैं। बीसवीं सदी में भी तो महात्मा गाँधी ने कहा है :—

ईश्वर अल्ला तेरे नाम। सबको सम्मति दे भगवान॥ पर यदि बार-बार महज्जनों के चेताने पर भी मनुष्य सज्ज्ञान-धारण न करेगा तो अपना ही विनाश करता रहेगा। परस्पर लड़ता-झगड़ता ही रहेगा। वह अपनी कुबुद्धि के अनुसार धर्म-रक्षण का प्रयास करेगा, यदर्थ वह न सक्षम है न प्रयोजनीय। धर्म की रक्षा भला कोई क्या करेगा। धर्म स्वयम् रक्षित है, अजर है, अमर है, शाश्वत है। वही मनुष्य का रक्षक है, यदि मनुष्य उसे यथावत् देखे समझे और आचारण में ढाले।''

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विश्व-प्रार्थना (श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती के अनुसार)

हे स्नेह और करुणा के अराध्यदेव! तुझे नमस्कार है, नमस्कार है। तू सच्चिदानन्दघन है, तू सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ है। तू सबका अन्तर्वासी है। हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान कर। श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ कर। हमें अध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दे, जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय प्राप्त हों। हम अहंकार, काम, लोभ और द्वेष से रहित हों। हमारा हृदय दिव्य गुणों से पूर्ण कर। सब नाम-रूपों में तेरा दर्शन करें। तेरी अरचना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें। सदा तेरी ही महिमा का गायन करें। सदा तेरा ही स्मरण करें। केवल तेरा ही कलिकल्मष-हारी नाम हमारे अधरपुट पर हो। सदा हम तुझमें ही निवास करें।

सर्व-सेवक की प्रार्थना (श्री महात्मा गाँधी के अनुसार)

हे नम्रता के सागर! शोषित-तिरस्कृत की दीनी-हीन कुटिया के निवासी! गंगा-यमुना और कावेरी-गोदावरी के जलों से सिंचित इस सुन्दर देश में तुझे सब जगह खोजने में हमें मदद दे। हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे, तेरी अपनी नम्रता दे, भारत की जनता से एक-रूप होने की शक्ति और उत्कण्ठा दे! हे भगवान! तू तभी मदद के लिए आता है, जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है। हमें वरदान दे कि सेवक और मित्र के नाते जिस जनता की हम सेवा करना चाहते हैं, उससे कभी अलग न पड़ जायें। हमें त्याग, भक्ति और नम्रता की मूर्ति बना, ताकि इस देश को हम ज्यादा समझें और ज्यादा चाहें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विश्व-मंदिर (श्री वियोगी हरि के अनुसार)

परमेश्वर का यह समस्त विश्व ही महामंदिर है। इतना सारा यह पसारा उसी घट-घटव्यापी प्रभु का घर है। पहले उस मनमोहन को अपने अन्दर के मंदिर में दिलभर देख लो, फिर दुनिया के एक-एक जर्रे में उस प्यारे को खोजते चलो। सर्वत्र उसी प्रभु का सुन्दर मन्दिर मिलेगा। तब अविद्या की अंधेरी रात बीत गयी होगी। प्रेम के आलोक में तब हर कहीं भगवान् के मन्दिर ही मन्दिर दिखाई देंगे। यह बहस ही न रहेगी, कि उस राम का वास इस घर में है या उसमें। हमारी आँखों में लगन की सच्ची पीर होगी, तो उसका नूर हर सूरत में नजर आयेगा, कोने-कोने से साँवले गोपाल की मोहिनी बाँसुरी सुनाई देगी। हाँ, ऐसा ही होगा। बस, आँखों पर से मजहबी तअस्सुब का चश्मा उतारने भर की देर है।

यों तो ऐसा सुन्दर मंदिर कोई भी भावुक भक्त एक आनन्दमयी प्रेम-कल्पना के सहारे हृदय-स्थल पर खड़ा कर सकता है, या अपने प्रेमपूर्ण हृदय को ही विश्व-मंदिर का रूप दे सकता है। पर क्या अच्छा हो, यदि सर्वसाधारण के हितार्थ सचमुच ही एक ऐसा विशाल विश्वमंदिर खड़ा किया जाये। क्यों न कुछ सत्य प्रेमी नौजवान इस निर्माण कार्य में जुट जायें। इससे निःसन्देह, संशय, अविश्वास और अनीश्वरता का दूषित वायु-मंडल हट जायेगा और सूखे दिलों से भी फिर एक बार प्रेम-रस का स्रोत फूट पड़ेगा।

वह विश्व-मन्दिर होगा कैसा? एक अजीब-सा मकान होगा वह। देखते ही हर दर्शक की तबीयत हरी हो जायेगी। रुचि-वैचित्र्य का पूरा खयाल रखा जायेगा। भिन्नताओं में अभिन्नता दिखाने की चेष्टा की जायेगी। नक्शा कुछ ऐसा रहेगा, जो हरेक की आँख में बस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाये। किसी एक खास धर्म-संप्रदाय का न होकर वह मंदिर सर्व-धर्म संप्रदायों का समन्वय मन्दिर होगा। वह सबके लिए होगा, सबका होगा। वहाँ बैठकर सभी सबके मनो-भावों की रक्षा कर सकेंगे, सभी सबको सत्य, प्रेम और करुणा का भोग दे सकेंगे।

चित्र उस मन्दिर में ऐसे-ऐसे भावपूर्ण अंकित किये जायेंगे, कि पाषाण-हृदय दर्शक को भी उनसे सत्य और प्रेम का कुछ-न-कुछ संदेश मिला करेगा। किसी चित्र में राज-राजेश्वर राम गरीब गुह को गले लगाये हुए दिखाई देंगे, तो कहीं वे भीलनी के हाथ से उसके जूठे बेर चखते मिलेंगे। कहीं सत्यवीर हरिश्चन्द्र, रानी शैव्या से वत्स रोहिताश्व का आधा कफन दृढ़ता से माँगते होंगे। कहीं त्रिलोकेश्वर कृष्ण एक दीन दरिद्र अतिथि के धूल-भरे पैरों को अपने प्रेम-अश्रुओं से पखारते मिलेंगे, और कहीं वही योगेश्वर वासुदेव घबराये हुए पार्थ को अनासक्तियोग का संदेश दे रहे होंगे। और भी वहाँ ऐसे ही अनेक चित्र देखने को मिलेंगे। भगवान् बुद्ध एक वेश्या के हाथ से भिक्षा ग्रहण कर रहे होंगे। कहीं घिनौने कोढ़ियों के घाव धोते हुए, दयालु ईसा का सुन्दर चित्र देखने को मिलेगा, और किसी चित्र में वही महात्मा संसार के पापों को अपने रक्त से धोने के लिए सूली पर चढ़ते हुए दिखाई देंगे। प्रियतमा सूली को चूमने वाले मस्त मसूर भी वहीं मुस्कराते हुए नजर आयेंगे। कहीं दर्द-दीवानी मीरा अपने प्यारे सजन का चरणोदक समझकर जहर का प्याला प्रेम से पी रही होंगी, और किसी चित्र में निर्बल सूर की बाँह झटककर वह नटखट नंद-नंदन वहीं कहीं लुके छिपे खड़े होंगे। एक और चित्र वहाँ आप देखेंगे। खादी की लंगोटी धारण किये गाँधी एक तरफ चरखा चला रहे होंगे। उनकी गोद में अछूतों के नंगे-धड़ंग बच्चे खेलते होंगे और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह अपने मोहन मंत्र से विपक्षियों के भी हृदय में प्रेम और सत्य को जागृत कर रहे होंगे। और भी कितने ही सजीव चित्र उस मन्दिर में खिंचे होंगे। हिमालय, गंगा और काशी-अयोध्या के दृश्य आप देखेंगे। वहीं बौद्धों के स्तूप और विहार भी दिखाई पड़ेंगे। काबे और जेरुसलेम के तीर्थ भी वहीं अंकित होंगे। बड़े-बड़े ऋषियों के, मस्त औलियों के, प्रेम-पीर का मर्म बताने वाले संतों और सूफियों के आकर्षक चित्र देखकर आप आनन्द के आकाश में उड़ने लगेंगे।

वहाँ अनेक धर्मग्रन्थों के समन्वयसूचक 'महावाक्य' भी दीवारों पर खुदे होंगे। वेद के मंत्र, कुरान की आयतें, अवेस्ता की गाथाएँ, बौद्धों के सुत्त, इंजील के उपदेश, कन्फ्यूसियस के सुवचन, कबीर के सबद और सूर के भजन आप उस मन्दिर की पवित्र दीवारों पर पढ़ेंगे। किसी भी धर्म-वाक्य में भेद न दिखाई देगा। सबका एक ही लक्ष्य, एक ही मतलब होगा। सब एक ही प्यारे प्रभु की तरफ इशारा कर रहे होंगे। उस विश्व-मन्दिर की दीवारों पर खुदे हुए वे प्रेम-मंत्र संशय और भ्रम का काला पर्दा उठा देंगे, अनेकता में एकता की झलक दिखाएंगे।

वहाँ की उपासना में पूर्व-पश्चिम का झगड़ा न रहेगा। सिरजनहार किस तरफ नहीं है? ये सारी दिशाएँ उसी की तो हैं। सारी भूमि गोपाल की ही तो है। वहाँ के एक-एक पत्थर में और एक-एक ईंट में प्यार-ही-प्यार भरा होगा। उन पत्थरों को चूमने में बेहद मजा आयेगा, और उन्हें दण्डवत्-प्रणाम करने में भी अपार आनन्द मिलेगा। वहाँ एकसाथ प्रेम का प्रसाद बाँटा जायेगा और वहीं खुदी की कुर्बानी भी की जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सभी बेरोक-टोक उस विश्व-मन्दिर के अन्दर जा सकेंगे। वहाँ 'प्रवेश-निषेध' की सख्ती न होगी। विद्वान् भी वहाँ जायेंगे और मूर्ख भी जायेंगे। पुण्यात्मा जिस द्वार से जायेंगे, उसी द्वार से पापात्मा भी जाकर प्रार्थना में शामिल होंगे। पतित से भी पतित मानव को वहाँ प्यार की पाक जगह मिलेगी। दलित और दण्डित, दीन और दुखी, पतित और पापी सभी वहीं परमपिता का दर्शन ले सकेंगे सभी गोविन्द का गुण-गान कर सकेंगे। पश्चात्ताप के आँसुओं से सुबह-शाम मंदिर का आँगन पखारा जायेगा, और प्रायश्चित की धूप से उसका कोना-कोना सुवासित किया जायेगा। उस महान् समन्वय-मन्दिर में ही साधकजन लोक-सेवा और विश्व-प्रेम का आदेश प्राप्त कर सकेंगे। धार्मिक झगड़ों से ऊबे हुए और मजहबी खून-रेजी से घबराये हुए शान्तिप्रिय साधक वहाँ बैठकर दिव्य प्रेम की साधना किया करेंगे। अपनी-अपनी दिली राह से हर कोई वहाँ अपने राम को रिझायेगा। उस मन्दिर में 'मैं-तू' न होगा; 'वही-वही' होगा।

क्या ऐसा सुन्दर विश्वमंदिर किसी दिन खड़ा किया जा सकेगा? क्यों नहीं? पागल क्या नहीं कर सकते? उनके दिल में बात उतर भर जाये, फिर ऐसा कौन-सा काम है, जिसे वे पूरा न कर सकें? वह शुभ दिन जल्द आ जाये, जब इस कल्पना का विश्व-मंदिर हमारे वृद्ध भारत की तपोभूमि पर निर्मित हो जाये और उस पर किसी धर्म मजहब का नहीं, बल्कि सत्य और ईमान का ऊँचा सफेद झण्डा फहरा उठे।

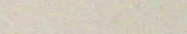

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्व-धर्म-ग्रन्थ प्रदर्शनी की क्रम-तालिका : अशान्ति से शान्ति की ओर

सुस्वागतम् :

(इस सर्व-धर्म-ग्रन्थ प्रदर्शनी में भारतीय संदर्भ में अनेक बहुधर्मीय-बहुभाषीय सदग्रन्थों को प्रदर्शित किया गया है। इसमें केवल कुछ ही मुख्य पुस्तकों की जानकारी दी जा रही है। मूल भाषा एवं लिपि पर विशेष ध्यान दिलाया गया है। किसी परम्परागत मान्यता का खंडन-मंडन करने का कोई उद्देश्य नहीं है। यदि आयोजकों के श्रद्धायुक्त सर्व-धर्म ग्रन्थ-समभाव के बावजूद, उनके अल्पज्ञान के कारण, किसी आस्था के विपरीत कोई बात दर्शायी गयी हो, तो वे दर्शकों से क्षमा-याचना करते हैं और उनके सुझावों का विनम्रतापूर्वक स्वागत करते हैं।)

(1) **पृष्ठभूमि : अशान्ति**

- मूलभूत ईश-वाणी का उद्‌गम : मानव की पुकार "त्राहि माम्"।
- बहुधर्मीय-बहुभाषीय सद्‌ग्रन्थों की यथार्थ पृष्ठभूमिः मानवता में अशान्ति की दुःखद परिस्थियाँ एवं सुखद उपलब्धियाँ।

(2) **निर्ग्रन्थी लोकधर्म**

- प्रकृति और संस्कृति में "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" की वाणी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

- आदिम-धर्म के अलिखित-असंकलित लोक-गीत एवं लोक-नृत्य।

(3) **वेद-संहिता, इतिहास-पुराण** (केसरिया रंग)

- हमारे सनातनी हिन्दू भाई-बहनों के लिए मान्य धर्म-ग्रन्थ।
- मूल भाषा: वैदिक एवं लौकिक संस्कृत।

(4) **श्रीमद् भगवद् गीता के विभिन्न स्वरूप**

(5) **श्री राम-कथा के विभिन्न स्वरूप**

(6) **अवेस्ता की गाथाएँ** (श्वेत रंग)

- हमारे पारसी भाई-बहनों के लिए मान्य धर्म-ग्रन्थ।
- मूल भाषा: पहलवी अथवा जेंद-अवेस्ती (पाजंद)।

(7) **आगम के सूत्र** (लाल रंग)

- हमारे जैन भाई-बहनों के लिए मान्य धर्म-ग्रन्थ।
- मूल भाषा : प्राकृत

(8) **त्रिपिटक का धम्मपद** (नीला रंग)

- हमारे बौद्ध भाई-बहनों के लिए मान्य धर्म-ग्रन्थ।
- मूल भाषा : पाली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(9) **श्री गुरुग्रन्थ साहेब** (पीला रंग)

- हमारे सिख भाई-बहनों के लिए मान्य धर्म-ग्रन्थ।
- मूल भाषा : गुरुमुखी।

(10) **कुरान शरीफ** (हरा रंग)

- हमारे मुसलमान भाई-बहनों के लिए मान्य धर्म-ग्रन्थ।
- मूल भाषा : अरबी।

(11) **कुरानी अरबी की विभिन्न शैलियाँ**

(12) **बाइबिल का पंचग्रन्थ (तौरेत)** (धुंधला रंग)

- हमारे यहूदी भाई-बहनों के लिए मान्य धर्मग्रन्थ।
- मूल भाषा : इब्रानी-अरामी।

(13) **बाइबिल के चार सुसमाचार (इंजील)**

- हमारे ईसाई भाई-बहनों के लिए मान्य धर्म-ग्रन्थ।
- मूल भाषा : यूनानी।

(14) **बाइबिल में विभिन्न संस्कृतियाँ**

एवं विभिन्न संस्कृतियों में बाइबिल-अनुवाद।

(15) **सर्व-धर्म ग्रन्थ समभाव**

- सम्पूर्ण ईश-वाणी का सारांश : "सर्व-धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(16) **परम लक्ष्य : शान्ति**

- सर्वहितार्थ धर्माचरण : ''लोका-स्समस्ता-स्सुखिनो भवन्तु।''
- वहुधर्मीय-बहुभाषीय सद्ग्रन्थों के मार्गदर्शन में शान्ति की ओर मानवता की महा-तीर्थ-यात्रा।

झाँकियाँ : ● सर्व-धर्मग्रन्थ वचन की जपमाला।

● अष्टदल-कमल-रूपी सर्व-धर्मग्रन्थ-स्तंभ।

कोटिशः धन्यवाद!

सेतुकरण संस्थान, जनहित-सदन
मिर्जापुर रोड
नैनी-इलाहाबाद–211008

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्वधर्म प्रार्थना (डा० दाऊजी के अनुसार)

हे सब धर्मों के आदिदेव,
हे अखिल विश्व के प्रतिपालक!
हे आत्म-शान्ति के महापुंज,
हे जगतपिता जगसंचालक!

दे हमें वेदव्रत का साहस,
दे हमें बुद्ध का महाज्ञान।
भर हममें ईसा का ममत्व,
दे हमें मुहम्मद का ईमान।

अहिंसा-पोषक महावीर,
भक्ति-मार्गी नानक, कबीर,
हम मनन, प्रचार, प्रसार करें,
वचनामृत जो कह गये पीर।

सम्मान करें हम गीता का,
बाइबिल, कुरान, ओम्पद का,
गुरुग्रन्थ, त्रिपिटक, अवेस्ता का,
हर धर्म और हर मजहब का।

पारसी-बहाई-बौद्ध-जैन
हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई
हो सर्वधर्म-समभाव सरस।
मानव-मानव हैं सब भाई!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

''शान्ति'' के लिए प्रार्थना

हे मेरे प्रभु, हे मेरे ईश्वर!
मुझे बना ले अपनी शान्ति का माध्यमः
जहाँ घृणा हो, वहाँ ला सकूं मैं प्यार
जहाँ अपराध हो, वहाँ क्षमा;
जहाँ विग्रह हो, वहाँ एकता;
जहाँ अन्धकार हो, वहाँ विश्वास,
जहाँ असत्य हो, वहाँ सत्य;
जहाँ विषाद हो, वहाँ हर्ष और सुख।

हे मेरे प्रभु, हे मेरे ईश्वर!
मुझे वरदान दे कि मैं उतना यह न चाहूँ कि लोग मुझे समझें,
जितना यह कि मैं लोगों को समझूँ;
उतना यह न चाहूं कि लोग मुझे प्यार करें,
जितना यह कि मैं लोगों को प्यार करूँ;
उतना यह न चाहूँ कि लोग मुझे सन्तोष दें,
जितना यह कि मैं लोगों को सन्तोष दूँ।

मुझे वह अनुभव करवा दे कि देने ही में प्राप्ति है।
क्षमादान करके ही मैं क्षमा प्राप्त करता हूँ।
मृत्य की प्रक्रिया ही मेरे लिए अनन्त जीवन है ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुभाषीय "शान्ति" अभिवादन

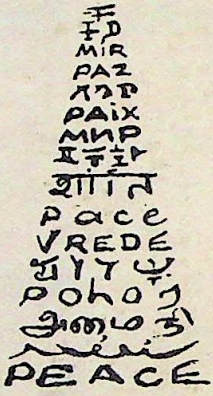

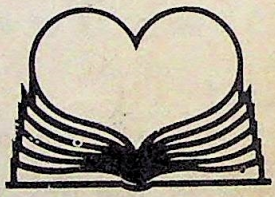

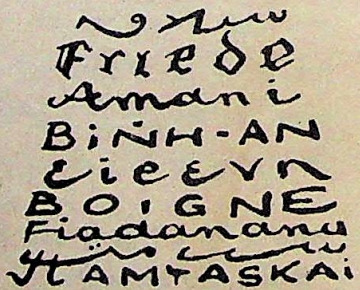

अशान्ति से शान्ति की ओर

Price Re 1/

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुभाषीय "शान्ति" अभिवादन

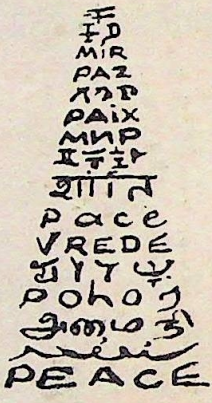

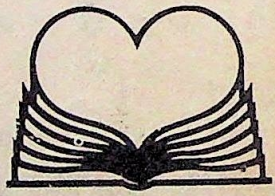

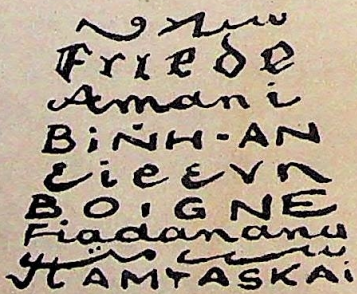

अशान्ति से शान्ति की ओर

Price Re 1/

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE